

“चायूगाडनयसक जूलिनिकालडाने”

धर्मरत्न बज्राचार्य सुरत श्री महाविहार

H-8

धनत्रि. मर्जतर्धं यूयायाय. धनयात्रियाविधि ॥ ॥ धनमदुः
न. रं नृथामस. यूजायाय ॥ कलस. कंर. सगनयूजा ॥ धनिधूनका
उ. क्रमरत्रि. तसाय. उचायकः निर्मंकनयाय ॥ मगह तालचा सग
न. गलपतशब्दं मासनीनमः ॥ चन्दनाकन. जज्ञाणवित. यूषीनमः ॥
यादर्थनमः ॥ सायाल ॥ धनेगलसयात ॥ ॥ वदक. कृ. वदकान्यादि
सगनी. यादार्थहस्तोद्ययातकाडा. धव २ थयसगय ॥ धदिलि. काडिलि

यूजा ॥ अचम ३ ॥ सूर्यार्ध. गुननमस्कात्र ॥ न्यास ॥ उतुष्टि. आल
यूजा ॥ ॥ आरोगादिकमनासनाययाइकां ॥ यतास्राय ३ ॥ कौक
यालायेब्दमा ० ॥ ॥ स्नान. चन्दन. सिन्दूर. जजम. दृष्टि. स्नान. कर्तू
यता. लिस्नान. लास्नान. गलण. आदिसकस्यातद्यायमाल ॥ ददयादि
शियाञ्जलि ॥ कौकौकौ कृपायालाय शियाञ्जलियाइकीयूजयामि ॥ अथा
ल. वज. वतीनि ॥ धूप. दिय. जाय ॥ तार. वेद. दायादि ॥ अतुगंध ॥

ॐ तिथदिलियुजा ॥ ॥ काठिलियुजा ॥ न्यास ॥ अरुनादि ॥ सिंहासना
थ ३ ॥ यांथागिन्याथ ॐ दमासननमः ॥ सनानादिमालकाकाय ॥ ॥
रियाञ्जलि वज्रवर्गीणि सकात्रव वलिविय ॥ धू. दि. ने. जाय ॥ स्मृत
॥ ह्यामात्रका ॥ अरुगंध ॥ ॐ ति काठिलियुजा ॥ ॥ ततः गलजयुजा
न्यास ॥ अरुनादि ॥ स्नानमालका ॥ ॥ रियाञ्जलि ॥ धू. दि. ने. जाया
ततः सिन्दूरसा ॥ अरुगंध ॥ ॐ ति गलसयुजा ॥ ॥ वरुकयुजा ॥

न्यास ॥ अरुनादि ॥ मयूत्रासनाय २ ॥ सनानमालकायातक ॥ वृं वं वं
वं वदकनाथय रियाञ्जलियाय ॥ वलि ॥ मूडा ॥ धू. दि. ने. जाय ॥ ॐ स्मृत
जीमसने वरुकनाथ ॥ अरुगंध ॥ ॐ ति वदकयुजा ॥ ॥ वक्राणि युजा ॥
न्यास ॥ हंसासन ॥ सनानः ॥ ॐ ति वक्राणि याय ॥ वलि ॥ धू. दि. ने. जाया
ततः हंसयिता ॥ अरुगंध ॥ ॐ ति ॥ माहव्वरी ॥ न्यास ॥ अरुनादि ॥ व
यासा ॥ स्नानादि ॥ ॐ ति माहव्वरी रियाञ्जलियाय ॥ वलि ॥ धू. दि. ने. जा

गोरु ॥ अंडाबुद्ध ॥ अरुगंध ॥ नूनिमाहध्वनी ॥ ॥ कोमात्री ॥ यास
 ॥ आरुनादिक ॥ मयूनास ॥ सानादि ॥ षडङ्गन ॥ यौं कोमात्रीरिया
 अलियाय ॥ वलि ॥ धूदिनेजा ॥ गोरु ॥ मयूनास ॥ त्रुठ ॥ अरुगंध ॥
 नूनि ॥ ॥ वेसूवि ॥ यास ॥ आरुनादिक ॥ गोरुनास ॥ सानमालका ॥ ष
 उङ्ग ॥ यौं वेसूविरिया अलियाय ॥ वलि ॥ धूदिने ॥ जाय ॥ गोरु ॥ मयूनास
 ॥ अरुगंध ॥ नूनि ॥ ॥ वनादि ॥ यास ॥ आरुनादिक ॥ षडङ्ग ॥ यौं वा
 ॥ महिरास ॥

गजास्र २

नाहिरिया अलियाय ॥ वलि ॥ धूदिनेजाय ॥ गोरु ॥ उरुनास ॥ अरुगंध ॥ नू
 ति ॥ ॥ अंडाबुद्ध ॥ यास ॥ आरुनादिक ॥ षडङ्गन ॥ यौं अंडाबुद्धिरिया अ
 लियाय ॥ वलि ॥ धूदिनेजाय ॥ जाय ॥ गोरु ॥ विरुह्यजी ॥ अरुगंध ॥ नूति ॥
 ॥ चामुद्ध ॥ यास ॥ आरुनादि ॥ षडङ्गन ॥ यौं चामुद्धिरिया अलियाय ॥
 वलि ॥ धूदिनेजाय ॥ गोरु ॥ विरुह्यजी ॥ अरुगंध ॥ नूति ॥ ॥ मा
 हालक्षी ॥ यास ॥ आरुनादिक ॥ सिंहास ॥ साननादि ॥ षडङ्ग ॥ यौं महाल
 क्षी

श्रीलियाञ्जलियायू. ३॥ वलि ॥ धू. दि. ने ॥ जाय ॥ गोरु ॥ सोदगुमात्र ॥ अरुगंध
॥ अंगिमहालक्ष्मीयुगा ॥ ॥ दक्षिण ॥ मालकारुवयक ॥ नाचायक ॥ वि
सर्जनयाय ॥ जगमान अविमकविय, जन्दन, सिद्धन, सत्यन, साहनि, स्थान ॥
आनिवादविय ॥ सादिधाय ॥ अंगिकोमानिजागविधि ॥ ॥ धर्मलि ॥
मइसदगवलिवियधूनकाडा, पालिलिहाडन ॥ थं दिलियातरुवदिकु ॥
दक्षिण ॥ केह ३ जाकि धर्ममहालक्ष्मीयाकाय ॥

यजमानस्य वर्षवर्द्धनकोमात्री ^{त्रा} अथन दगावयार्चनयुगा अर्चन निमित्त
थं कमधुनूययराजन ॥ ॥ सं ३१ अथवदिलत्रा ३ त्रय आनन्दसिंहपुरा

र्यकमधुनूयूष्यराजनसमययामि ॥ ॥मिसातासनयूजाहलजा
नकं,मनकललिजानकं ॥यूजाजालन,मालकासाक्रागिनिक्कवूयक ॥
जायूजाडान ॥यातासनवासचाय ॥अवृथ,वलियातषटकाव,अवृ
थयातषटिकाव ॥सुधयातयार्गचाय ॥यचवलि ॥यात१कउद्धवन
कायतीस,चात्याकतय ॥शिवउवलिवारय ॥ ॥अचाकन,चात्याकनि
र्मचनयाय ॥मिसलीलद्धडानत ॥००का,यूकानगम ॥००किविश्विच

काङ्कनायकः अस्माकं दृष्ट्वा हा ३ ॥ ॥ चनेडावलिस ॥ सर्वविघ्निकृत
थावलिंगक २ स्थाहा ॥ मन्त्रवियः सूयकासायादि वलिक्काय ॥ ॥
जात्याकस ॥ सनानः यंचामृगस्नान ॥ चतुनः सिन्दूर जजम दृष्टि ॥
स्थान चयूमधिः कर्तृयताः पञ्चयता अद्वालते ॥ ॥ पूजायाय ॥ ति
तले गुनमस्कात्र न्यास ॥ षष्ठः सूर्याद्य ॥ अद्यादि ॥ गजनस्य स्वर्ण
कुमात्रहीरुल विवार नानिकयूजानिमित्तार्थं ही सूर्याय अर्घ्यनमः ॥

पूष्यनमः ॥ गुनमस्कात्र न्यास ॥ अर्घ्यपात्रपूजा द्वादशा दिन ॥
आवाहनादि ॥ उक्तं द्विज्वात्मपूजा ॥ ॥ शिवाय ॐ दसासन
नमः ॥ स्वस्मान्कण्ठपालाय ॐ दसासनं नमः ॥ गणयत्यादि सा
गलाय संगणयत्रिवात्राय ॐ दसासनं नमः ॥ पूष्यनमः ॥ ॥ चात्याक
सपूजन ॥ ॐ सथाजाताय नमः ॥ ॐ वामदेवाय नमः ॥ ॐ अद्याना
य नमः ॥ ॐ तत्पूलखाय नमः ॥ ॐ ॐ ग्नाय नमः ॥ ॥ दशना

कपालपूजा ॥ लूंः उदायनमः ॥ जूंः जूयनमः ॥ यंयमायनमः ॥
नंनैषयायनमः ॥ वंवनूक्षायनमः ॥ वांवायूयायनमः ॥ कं कूवे
नायनमः ॥ ॐः ॐः क्षमायनमः ॥ जूंः जूदायनमः ॥ उंः उदायन
मः ॥ ॥ आदित्यादिनवग्रहपूजा ॥ आंः आदित्यायनमः ॥ सांः शमा
यनमः ॥ जूंः जूक्षमायनमः ॥ वूंः वूदायनमः ॥ वूंः वृहस्पतयनमः
॥ हूंः हुक्रायनमः ॥ हूंः हनिष्यनायनमः ॥ रांः राहवेनमः ॥ कंः क

तवेनमः ॥ ॥ जूचित्रीजिपूजा ॥ जूंः जूव्यस्कामायनमः ॥ वूंः
वलिषनमः ॥ वूंः व्यासायनमः ॥ हूंः हनुमानायनमः ॥ हिं ४
विरीषनायनमः ॥ कूंः कृपायनमः ॥ यूंः युर्गुनामायनमः ॥ मां
४ मार्कण्डेयायनमः ॥ आवाहनादि ॥ ॥ वलिपूजा ॥ यतासनाय
नमः ॥ मयूनासनायनमः ॥ नवासनायनमः ॥ गवागनायनमः ॥ मू
क्षमायनमः ॥ उं कूं कृपायालयवलिगृहस्थाह ॥ वंवनूकनाथ

यवलिङ्गद्रु २ स्वाहा ॥ यांथागिनीत्या वलिङ्गद्रु २ स्वाहा ॥ चां चामू
लुब्धनिवलिङ्गद्रु २ स्वाहा ॥ गंगधयतयवलि ० स्वाहा ॥ अवाक् ॥
॥ सगुणपूजा ॥ उं जां जीं जूवस्त्रामादिजुष्टचिरीं जीवीत्या दधिमुक्त
यनमः ॥ ३ ॥ वाहनादि ॥ ॥ गणयतिपूजा ॥ मूष्मसनायनमः ॥ गण
यनयनमः ॥ विधुष्यनायनमः ॥ नृकदनायनमः ॥ यष्टुहस्तायन
मः ॥ सिद्धिविनायकायनमः ॥ अवाक् ॥ ॥ (गणयतिपूजा) ॥

गणमातृस्थानमः ॥ नन्दायनमः ॥ रुद्रायनमः ॥ रुद्रायै नमः
॥ सुसिनायै नमः ॥ जगमातृस्थानमः ॥ यंचमातृस्थानमः ॥ अवा
क् ॥ ॥ कोमालियूना ॥ वृक्षागिनमः ॥ मादुष्वरीनमः ॥ कोमा
रीनमः ॥ वैष्णविनमः ॥ वाराक्षे नमः ॥ नून्दायनीनमः ॥ चामू
कुशायै नमः ॥ मादालक्षे नमः ॥ कुं कोमात्रीकादवीनमः ॥ अवा
क् ॥ ॥ सिधुमूढ ॥ जीं सिंधुयात्रायनमः ॥ जीं पूर्वचलायदर्यनाः

यनमः॥ अवाञ्छ ॥ युतिष्ठा ॥ धूपः दीपः नेवश ॥ जाय ॥ स्नात ॥ अ
वाञ्छानमार्गः द्वादिसकलतथाप्यवकाशु नर्ध ॥ ध्यायन्कसिद्धि
दत्ता एव एव नर्धः कृत्यालनमामि ॥ सिन्दूरत्रिगुणं संपलियदं
युवतिवल्लरु संयमजयदलक्ष्मी ॥ निवाससर्वकामदं ॐ पूर्वचन्दुत
स्य दध्यं निनयायनाशनं ॥ आत्मविम्बसर्मतस्य संपदाय जयाय च ॥
यिनिनीनमतह तावदान सुगुणं स्वाचक ॥ चतः सिन्दूरसगुणं तिच

कः स्वानं चक ॥ मिसागानिर्द्धतिचक ॥ सिद्ध आनति युतिष्ठा ॥ न्यास
त्रिकायः विसर्जन ॥ स्वस्तिचायाउ यजायति तयः लाहातस लेखनहा
यः स्वस्तिचाय चितः सिन्दूरस्वान जजमकातय ॥ यजायतिमूर्तयत्
०० दमासुननमः यूष्यं नमः ॥ अतुर्गंधादि ॥ चात्याकनडाह्राय ॥
दात्रमधिः सितावृसाधियकाउ नडाह्राय ॥ त्रैलोक्यत्रयसमासात्राउ
यजायतिह्राय ॥ द्वादसकनतयाउ अविस्करविय चन्दनादि आशिर्वाद

क्रसकनकेने ॥ साक्षिथय ॥ वाक्कदथूर्थ ॥ ॥ मिताताचियनः
 थियकलक्षय ॥ लिहाडायाडाः स्वानवियमूचायात ॥ स्वसिक्कयासदावि
 थि, स्वसिमाहदुलेवच। यागिस्वसिस्वर्वाश्च, स्वसिभसदगका ॥ पूर्व
 दक्षिणयश्चय उर्ध्वनाडाध्वनसुधा, स्वसिषभगमस्मानु, गुफायकट
 दवता ॥ हेनवाहेनविष्मझ, स्वसिस्वस्वः स्वचक्रका। स्वमकुचस्वमूड
 स्व, स्वायूधायत्रिवात्रिका ॥ ग्रहनक्षत्राणिस्मा, स्वसिस्वस्वयय। स्वः
 स

सिवीनायमनास्व, यागिन्ध्यागनयिका ॥ स्वसिदवाधिदवत्वं, मकु
 नाजानिन्नकलं। दृश्ययत्रात्रिहकाश्च, स्वसिक्कलाग्निदवता। स्वसिना
 जायजानीच, जजमानास्वसिस्वर्वा ॥ ॥ यवादकयाय ॥ जगतिपिनि
 काउभय ॥ चतुनादिआनिर्वीद, अविमक ॥ ॥ उंनमः निवायः ॥
 चायूजाअनेयात ॥ काटलपूजाइ १, नाय, यागाय, धून, जजम, अक
 न, यचयताका, कर्षयता, दृसि, अदुआ, चमधि, नसकलं, सर्गधत्रियाट, द
 गध, (गयभस, कोमालि, सलिनडा, वलियाट ४, ग्वजजाय १, तवनडाग्व १, चे

नडा १२. कृष्णचत ॥ मालस्वान, जलालक, पंचामृत, साइइ, कालक, बिधु
 मूं, मतद, गालचा, व्रीका, लका, दलदादाल, जाकिदल, धनिदल, मभिद
 ल, तडातामधि, सिताधकि, मतकि मधि, सद्दा, दडवाता, माकसिनउ
 इउमयाषयू २ मतकललि ॥ ग्वरग्वग दक्षिणाद ४ मिताता, चिपनधियकज
 लनमालका ॥ नायवाज, काहान, म्वाहानि ॥

जीग (मसाय) ॥ ॥ विवाहाविधि ॥ यद्गुद्ववपिधियूजाअन ॥ थव २ दान

मालकावसयाडा ॥ ॥ सुवल्या ३ लायाय ॥ माहनिहय, माहनिवक्राय
 तदृष्टिखालयाततय ॥ ॥ पिधियूजानलिहाडायाडामवातायत ॥ निर्म
 क्कयायः ०० कायकानगाल, उतवलिविय, मतनेयूतयाडा, पिखालेख
 सक्काय ॥ दक्षिणाक्कायक, केग्वतन, शिया ३३ क्काय ॥ यीतथेता, तर्प्यन, समय
 याय ॥ वाचमलैखतय ॥ चेत, खानदेवसुक्काय ॥ जजनसुक्काय ॥ साकिथ
 यन्यासलिकाय, धीउलिधय, थतपिधियूजायाविधि ॥

मार ॥

सनयनय ॥ क ॥ क ॥ क ॥ क ॥

अकृतयाल ॐ लका युका फालचिदा ॐ देवलिङ्गाय
विवाहालकुङ्कु. कायां चिनाय काल ॐ न ॥ काठाल. ताहाय. जाययक. धून
मत. अकृत. ॐ कायका. ॐ नायकाल. ॐ शु. दुष्टि. देवयाथास. देवयूजाया
य. गुनमस्कायास. जलपय अर्घपाययुजा ॥ उत ॐ द्विआत्मयुजा. मालनि ॥
यश्च। वलि ॥ अतिदेवयामि ॥ आरात्राकि ६ मूलास्त्राययाइका ॥ ध्यान ॥
नंगजवकुंगजाकाल. नकवर्षवत्रयद. साधकस्यसामर्थ. यासाधुका
धनधुर ॥ यसन्नायहसं च. धायमगुव (हालकट) सिद्धननकविचार.

कुङ्कुमात्रवियह ॥ नागजस्त्रायवीताङ्ग. मयत्राकटिहसिर्त. नककुमा
लालकात्र. सिद्धिदेसर्वकामद ॥ विनायकहमवर्ष. चतुर्वार्दयत्रयया
यासाधुकायावह. धायनयत्य (० नत्र ॥ ॐ ति ध्यान ॥ ॥ गंगिगूं (गंजो)
गः ग्मृ. श्रीगमविक्रययुमादयनीकि सहितारयिया अलियुयकाइका
३ ॥ ॐ वलि ॥ ॥ नंदसास्त्राययाइका ॥ ६ ॥ नंजुवका (श्रीगीयाइका ॥ वलि ॥
७ ॥ मूलमकुगणिया अलि ॥ वलि ॥ त्वाकमहावलि ॥ मूडा ॥ धूप ॥ दिय ॥ भेदय ॥
गाय ॥ स्तुत ॥ सिद्धनसादमूदमूत्यादि ॥ जथावान ॥ वाक् ॥ नकायक ॥ क

वानच्छय ॥ देवरा कथा दृक्कृत अकर्षन मनु वजयडा कायाडा. यिनाय
 कालसतेय ॥ दृष्टि कर्षुपता का देवरा कथा दृक्कृत ॥ अश्वयुर्व्याय ॥ वलि
 थयसादि थय ॥ नासलिकाय ॥ वाजन था गकाडा कृ दय ॥ ॥ कृसथान
 थकाडा. अष्टपुत्र आसन थायाडा तय ॥ यंचवलि ॥ जलपारु. अर्धयारु थायाडा य
 जायाय द्रुथ (थं) पूजामाल. क्रिद्रि क्रियायूजामाल. मतविशमाल ॥ ॥
 यिनाय सत्य सं थ (थं) यिनाय काल सचा दल रवन देव त्रय. अकथाल दृक्कृत देव
 स्तुतय ॥ चतुस्त्रानखलाडा देव पूजायाय लात साखा दयाय. मलात सात्वा कर्त
 खाय ॥ धन ॥ ॥

अलिनिकालडान ॥ ^{जा ३} पूष्यराजनयातक ॥ अश्व ॥ वाक्क (अश्व. चूज कर्षुदिह
 दादि ॥ आचार्याय कमधुत्र पूष्यराज नैसर्मययामिः ॥ ॥ वाजन था
 गकाडा ॥ मिसायनिसुयूरुल. मतकललिलेडा द्राय ॥ अलिनिकालडान
 ॥ थस (थनकाडा. खायनिसयद्रा काल थाय. यंचवलि. वलिया. तय अर्धः
 ततय ॥ सूर्यार्धयाय ॥ उत्रनमस्कादिनास जलार्धयारु पूजा ॥ मालनिय
 ॥ ०० ॥ यंचवलि ॥ द्रुथ (थं) गित मनु व पूजा धूप. दियः जय ॥ स्मृत ॥ उउलि

पीठ पूजा विधि
(सुवर्णकुमार विधेयं प्रति)

H-8

धर्मरत्न ब्रह्माचार्य सुरत श्री महाबिहार

अथ हानद्वारा जल, हासकनराज भर्मण पूरा भोजि वधन गमय
ति सक्तु य दान श्री २०० देवता ज्ञाता धन देवो ज्ञान पूजा निमित्त
र्थ ॥ ॥ गणपति जल माहका ज्ञाता धन पूजा ॥ ॐ

जथावान ॥ अनेहत्यादि ॥ कथानकुरः स्थानकाकाय ॥ साक्षिथाय ॥
न्यासलिकाय ॥ मिसातायतकगुठविय ॥ कौलपूजाहलसअलिनिताया
अ. मिसागलडाकाय ॥ वाजनथातकावकुरहय. पिरवालखूस ॥ निर्मचन
ॐ का. प्रकानगमलाडा ॥ अर्चलिनिययाडा. मतहनत्यानडाः सिरुननूना
अ. सगुलनत्याकाडा ॥ मतविय ॥ यतस्थानदवकुरकाय. मिसात्तित्त
क ॥ नकिनन. लसायाडा. अग्रमद्युयसत ॥ यतअलिनिद्रकायविधि ॥

॥ ततावुक्तादिअष्टकलसार्चनं ॥ पूषा राजनयातक ॥ अचम्य ॥ न्या
स ॥ यननिर्मचनयाय ॥ मयमित्राः चलयतिजास ॥ ॐ का. प्रकानगमल
॥ नैकिविश्विचकोकभायजः अक्रायदृष्ट्याहा ३ ॥ किगुठलखकायाः
अचलयतिस्त ॥ ॥ मरु. जः अक्रायदृष्ट्याहा ॥ चलयतिस्त. यिता
लनेयुतंविष्ट. मिम्याल. चतिक्काय ॥ ॥ यनलिखकायः सिरुन. कौल
चिकनकाय ॥ दक्षिवियके. मतहनत्याय ॥ ताउचानत्याय ॥ सगमन

नैलाय ॥ लंखानहाय ॥ चतुर्दशसिद्धयः स्वानुकाय ॥ ॐ
 निनिर्मलकनविधि ॥ ॥ ततो वक्रादिजुस्तकलक्षणार्चनं ॥ अचम्य ॥
 ग्रास ॥ सूर्यार्च ॥ पूजनं ॥ लंखानहाय, चन्दन, सिन्दूर, जङ्गाय
 वित, पूष्य ॥ पुनमस्तु ॥ ग्रासः वक्र (तजुस्तुयदृष्ट ॥ ॐ वुं
 जंजुगुष्टायनमः ॥ ॐ वुं दीर्गार्चनं ॥ ॐ वुं मधमायनमः ॥
 ॐ वुं जंजुनामिकाय २ ॥ ॐ वुं जंजुनिष्ठिकाय २ ॥ ॐ वुं जंजुनजुस्तुयदृष्ट

ॐ वुं जंजुनदयाय २ ॥ ॐ वुं जंजुनगिरिस्वारा ॥ ॐ ह्यादिषु उक्त ग्रास ॥
 जलपण, जर्घयाणपूजा ॥ कच्छयमूलावध्या ॥ उत गुह्यि जालयका ॥
 ग्रासमन्त्रानजवाहन ॥ ॥ ततो ध्यानवलियूजनं ॥ ॐ जयताम्रायनमः ॥
 ॥ जंजुदयादिनयूजर्घ ॥ ध्यान ॥ यताम्रस्त्रिदश, नलवर्षकवक्रकं ।
 तिनर्गुषु जदय, खड्गदृष्टकधननं ॥ उमर्गुषु गह्वरं च, विन्दुकाया
 लक्ष्मणकं ॥ मूढहादिगुषागी, ध्यातव्यं कृणुयात्कं ॥ कृणुमूर्त्येनमः ॥

वलि ॥ उं कीलूं नूं सूं कूं वूं यूं सूं दूं जूं दहालाकपालाय वलिंगुद्रा २ स्वाहा
॥ उं की जूं नूं ॐ ॐ उं उं मं जं ॐ ॐ नूं उं उं जूं ४ जूं हरे नवाय वलिंगुद्रा २
स्वाहा ॥ उं कां किं दूं कूं कूं यपालाय वलिंगुद्रा २ स्वाहा ॥ ज्वाका मूला ॥ ॐ
निधानवलि ॥ ॥ ततो कलः सर्वं ॥ अदो नागपूजनं ॥ त्रैलोक्य कमलासना
यनमः ॥ उं जून नासायनमः ॥ उं वासुकी २ ॥ उं तद्रकाय २ ॥ उं कर्कातका
य २ ॥ उं सखयानाय २ ॥ ध्यान ॥ नागयासुधनंदकं तथानातुरियविय

ह। सर्वकलाकंधवर्न, ध्यानवद्नमास्तुते ॥ गै नो मूर्त्य ध्यानयूष्यं नमः
॥ ॥ वलि ॥ उं कुं वने वश्य वलिंग द्र २ स्वाहा ॥ अगुर्गंधादि ॥ ॐ तिज
स्तुनागयूजा ॥ ॥ तताजकजकनियजनी ॥ उं जकजकनिमूर्त्य ॥ ॐ
दमासर्ननमः ॥ जांजकयनमः ॥ जीजकनिनमः ॥ ददयादिषु
गनयूजा ॥ आवाहनचन्दनाकृतयूष्यं नमः ॥ नेवश्य वलिंग द्र २ स्वा
हाः ॥ अगुर्गंधादि ॥ ॐ तिजकनीयूजा ॥ ॥ तताशीलक्रीयजनी ॥ उं ती

लक्ष्मीसूर्य ऋदमासननमः॥ छीयनमः॥ उं लक्ष्मीयनमः॥ उं ध
नयनमः॥ उं क्षनयनमः॥ आवाहनाय चन्दनाकरपूष्यनमः॥ ने
वशवलिंगुद्र २ स्वाहा॥ अंगुगंधादि॥ ॐ तिष्ठीलक्ष्मीयुजा॥ ॥ ग
ता अक्षकलसयुजनं॥ आदीष्टीवक्त्रकलसार्चनं॥ छीवक्त्रकलसाय
ॐ दमासननमः॥ हृदयादिषुठ (गनयुजनं॥ ॐ हृदयायनमः॥ श्री
गिरसनमः॥ ॐ गिरवायनमः॥ ॐ कवचायनमः॥ ॐ नेत्रुत्रयायनमः

॥ ॐ अक्षायनमः॥ उं ॐ श्रीवक्त्रकलसाय त्रिया अलियूष्यनमः
॥ युजनं॥ अं अयानाय नमः॥ अं अश्वक्त्रमायनमः॥ छीष्टीवक्त्र
कलसायनमः॥ आवाहनचन्दनाकरपूष्यनमः॥ नेवशवलिंगुद्र २
स्वाहा॥ जाय॥ छीस्वाहा॥ अंगुगंधादि॥ ॐ तिष्ठीलक्ष्मीयुजा॥ ॥
ततायुगुलिकलसयुजा॥ युगुलिकलसाय ॐ दमासननमः॥ यं हृदयायन
मः॥ यं गिरसनमः॥ यं गिरवायनमः॥ यं कवचायनमः॥ यं नेत्रुत्रयायनमः॥

षट् ॥ पञ्जसुयहट् ॥ ॐ य्वां धीपुं हुली कलसाय गिया ॐ लियुष्यं नमः ॥
यूजनं ॥ धूं धू वाय नमः ॥ वंदलिवनमः ॥ धूं य्हु लिकलसाय न
मः ॥ आवाहन स्कायन चन्दना कृत य्पुष्यं नमः ॥ निवेश वलिंगु द्वा २ स्वा
हा ॥ जाय ॥ धूं स्वाहा ॥ अरुगंधादि ॥ ॐ तिपूठलिकलसयुजा ॥ ॥
तता ध्वज कलसायुजा ॥ ध्वज कलसाय ॐ दमासनं नमः ॥ धं ददया
यनमः ॥ धिं गितस्स्वाहा ॥ धूं हा वाय वाषट् ॥ ॐ ददयाय हूं ॥

ॐ नरुगुयाय वाषट् ॥ धं अस्माय हट् ॥ ॐ ध्वां ध्वज कलसाय गिया ॐ
लियुष्यं नमः ॥ यूजनं ॥ सां सामायनमः ॥ धूं हनुमकायनमः ॥
ध्वज कलसायनमः ॥ आवाहन स्कायन चन्दना कृत य्पुष्यं नमः ॥ ॐ
निवेश वलिंगु द्वा २ स्वाहा ॥ जाय ॥ धूं स्वाहा ॥ अरुगंधादि ॥ ॐ तिध्व
ज कलसयुजा ॥ ॥ तता कलसायुजा ॥ कं कलसाय ॐ दमासनं न
मः ॥ कां ददयादि ॥ ॐ य्वां कलसाय गिया ॐ लियुष्यं नमः ॥ यूजनं ॥
धूं धू वाय नमः ॥ ध्वां धूं वासायनमः ॥ कं कलसायनमः ॥ आवा

ॐ ॥ नेवद्यं वलिंगुद्र २ स्वाहा ॥ जाय ॥ कं स्वाहा ॥ अरुगंधादि ॥ ॐ
निकलं यज्जा ॥ ॥ ततो चामलकलं यज्जा ॥ चो चामलकलं यज्जा
ॐ दमासुर्नमः ॥ चंददयाय नमः ॥ चो गिरिपुत्र स्वाहा ॥ चं गिरिपुत्र
षट् ॥ चं कवचाय दूं ॥ चो नरुयाय वषट् ॥ चं अक्राय हूं ॥ चो च
मलकलं साय प्रिया ॐ लियुष्यं नमः ॥ पूजनं ॥ ॐः अलिलाचना
यनमः ॥ कं कयाय नमः ॥ चो चामलकलं यज्जा ॥ अवाहन स्वाय

न चन्दना कृतयुष्यं नमः ॥ नेवद्यं वलिंगुद्र २ स्वाहा ॥ जाय ॥ चो स्वा
हा ॥ अरुगंधादि ॥ ॐ नि चामलकलं यज्जा ॥ ॥ ततो मरु कल
ं यज्जा ॥ मं मरु कलं यज्जा ॐ दमासुर्नमः ॥ मां ददयाय नमः ॥ ॐ स्वादि
कला अयास ॥ मं मरु कलं यज्जा प्रिया ॐ लियुष्यं नमः ॥ पूजनं ॥ नं नला
सनाय नमः ॥ यं प्रसूनामाय नमः ॥ मं मरु कलं यज्जा ॥ अवाक
॥ नेवद्यं वलिंगुद्र २ स्वाहा ॥ जाय ॥ ॐ स्वाहा ॥ अरुगंधादि ॥ ॐ

तिमकु कलशयुजा ॥ ॥ तनीकु कलशयुजा ॥ कुंकु कलसाय ॐ
दमासर्ननमः ॥ कुंददयाय नमः ॥ ॐ त्यादिकलाअयास ॥ ॥ युज
न ॥ ॐ कुंकु कलशाय शिवाअलियुष्यनमः ॥ पुं पुरुषाय नमः ॥
हिं वि ॐ विषनाय नमः ॥ कुंकु कलशाय नमः ॥ आवाक ॥ नेवश
वलिंगु २ स्वाहा ॥ जाय ॥ कुं स्वाहा ॥ अगर्गंधादि ॥ ॐ ति कुंकु कलश
युजा ॥ ॥ हं ख कलशयुजा ॥ हं ख कलशाय ॐ दमासर्ननमः ॥ सुंददयाय

नमः ॥ ॐ त्यादिकलाअयास ॥ ॐ सुं हं ख कलशाय शिवाअलियुष्यनमः ॥ पुं पुरुषाय
नमः ॥ सां मार्कंडेय नमः ॥ ॐ संख कलशाय २ ॥ आवाहन ॥ नेवश वलि
गु २ स्वाहा ॥ जाय ॥ सं स्वाहा ॥ अगर्गंधादि ॥ ॐ ति हं ख कलशयुजा ॥ ॥
वु कुंकु कलशयुजा ॥ आचम्यायास ॥ आसर्न ॥ ॐ वु कुंकु कलशयुजा ॥
दमासर्ननमः ॥ वंददयाय नमः ॥ ॐ त्यादिषडङ्ग ॥ आवाहन ॥ ध्यान ॥ ॐ च
मुमुखकुरुवाकं कुं प्रांजिनविउ शिवा ॥ यद्वासनहिनादव हं स्वाहनसा
हिर्न ॥ कमठुल्लूकसूर्य दधुयूक्तकधनिर्ण ॥ विवाहाहलदसीमी सर्वसि

द्वियदायक ॥ उक्ता न वदनं सिद्धि, ध्यायतु यनमी सन ॥ ॐ वृं जं वृद्धा ध्या न
पृथ्वी नमः ॥ ॐ कं कृत्तयुगमय नमः ॥ ॐ दं दायनयुगमय ॥ ॐ यं यं ता युगम
य ॥ ॐ कं कलिशमय ॥ ॐ कं मल्लदय ॥ ॐ यं यशवदाय ॥ ॐ सां सां मठ
दाय ॥ ॐ जं जूथवदाय ॥ ॐ लं लूदाय ॥ ॐ जं जूथय ॥ ॐ यं यमाय ॥ ॐ नं न
मयाय ॥ ॐ वं वनूथय ॥ ॐ वं वायूयाय ॥ ॐ कं कूवेलाय ॥ ॐ रं रीतनाय ॥
॥ जं जूदाय ॥ ॐ उं उदायनमः ॥ ॥ मं महेश्वराय ॥ ॐ वं विष्णवे ॥ ॐ नं नृ

दाय ॥ ॐ सं सदाशिवाय ॥ ॐ वं वृद्धा नमः ॥ ॥ तिथि पूजनं ॥ ॐ तिथिपदा
य ॥ ॐ दिगियाय ॥ ॐ हती ॥ ॐ कउष्टि ॥ ॐ यं च ॥ ॐ मध्याय ॥ ॐ सकम्या ॥ ॐ जूद्धम्या ॥ न
व ॥ ॐ दशम्या ॥ ॐ उकादस्या ॥ ॐ द्वादस्या ॥ ॐ त्रयाद ॥ ॐ चतुर्दस्या ॥ ॐ पूर्वमास्या ॥ ॐ जूमा
वास्या ॥ ॥ ॐ जूद्धा विसनकणयज्ञा ॥ ॐ जूद्धिनि ॥ ॐ रुगनि ॥ ॐ कर्हिका ॥ ॐ गहिनि
॥ ॐ मृगनिगा ॥ ॐ जूडा ॥ ॐ पुनवस् ॥ ॐ पुष्या ॥ ॐ जूद्धा ॥ ॐ मद्या ॥ ॐ पूर्वहार्तु ॥ ॐ उगहा
र्तुनि ॥ ॐ रुक्ता ॥ ॐ विगा ॥ ॐ स्वातिय ॥ ॐ विगमया ॥ ॐ जूनराग ॥ ॐ जूद्धाय ॥ ॐ मूलाय ॥ ॐ पूर्व
षादा ॥ ॐ उषाषादा ॥ ॐ धवन्म ॥ ॐ धनिष्ठा ॥ ॐ गतहिष्ठा ॥ ॐ पूर्वरुडा ॥ ॐ उगुरुडा ॥ ॐ प्रव

ह्ये ॥ ॥ जागय जा ॥ उं विष्णु राय २ ॥ पी ह्ये ॥ अयम्मान ॥ सी राने शय २ ॥ ॥ अहना ॥ अ
मिर्गंधा ॥ शुक्र मर्मा ॥ धृ ह्ये ॥ अलय ॥ गंदय ॥ वृद्धि ॥ धृ वय २ ॥ व्याया ॥ हर्ष ॥ व
ज ॥ सुद्धि ॥ यगिया ॥ वलियान ॥ यत्रिद्य ॥ निवाय ॥ सिद्धिय ॥ साध्य ॥ शुभय ॥ शु
क्र ॥ वक्र (ह) ॥ नंदिय ॥ वेध ॥ ॥ रासि १२ ॥ मयायनमः ॥ वृष ॥ मिथू ॥ कर्कट ॥ सिं
हा ॥ कं च्या ॥ तुला ॥ विष्ठा ॥ टं च्या ॥ मकरा ॥ कुम्भा ॥ मीनायनमः ॥ ॥ नवग्रह
॥ ज्योतिषाय २ ॥ सां माय ॥ अंः अमना ॥ वंः वृक्षय ॥ वंः वृहस्पत ॥ शुंः शुक्रा ॥ वंः व

नि ॥ रांः राहव ॥ कंः कुरुव २ ॥ ॥ अष्टविंशति वि ॥ अंः अस्वत्थामाय ॥ वंः व
लिव ॥ यांः यासाय ॥ हंः हनुमन्ता ॥ विंः विरिचता ॥ कंः कृपा ॥ यंः यत्रासाय २ ॥
मांः मार्कण्डेय ॥ सर्वेष्टादवष्टायजायतिनमः ॥ वक्रादिमूर्त्यनमः ॥ धृयदिय ॥
जाय ॥ उं वं जूसाहा ॥ १० ॥ मधुल सुत ॥ उं नमः कृपायालाय ॥ अक्षयकानमा
र्गहृदिसकनगतवृक्षवृक्षाद्युनर्ध्व ॥ ध्यायकसिद्धता जमतिरयकलं ॥ रं न
वीविष्टवृष्य ॥ व्यापक विष्णुनाथं ॥ सकनजगतन ॥ वृष्टिसंहारवृष्य ॥ कल्याण
सिद्धिहता ॥ एवमयहननं ॥ कृपायालं नमामि ॥ १ ॥ उं नमो नागय ॥ नागधि

कनमास्तुत्यं जनकादि कलाजला ॥ नागिन्या नगयूगाश्च जलगाङ्गाश्च न
मास्तुत ॥ २ ॥ ॐ नमो जङ्गकन्या ॥ जङ्गन सहितं जङ्गया धनधन्यसुखं यदा ।
यास्तुत्यं चर्त्तायें च चन्द्रहवनदायकं ॥ ३ ॥ ॐ नमो धीलक्ष्मी देव्यै नमः ॥ श्री
देवी श्री यक्षानिह लक्ष्मी संपातिवर्द्धनं ॥ गृहसधनधनार्थं च बुद्धिमीरवा
कनिनम ॥ ४ ॥ सिद्धमूढया ॥ ॐ सिद्धुनसि र्यं स्य लि यदंयूवति वल्ल
हं ॥ स्यामययदलक्ष्मी निवास सर्वकामदं ॥ ५ ॥ क्लृप्तनया ॥ ॐ पूर्वचद

निर्दण्डस्य दर्शनं यायनासनं ॥ आत्मविवस्मनस्य स्य दायजयायच ॥ ६ ॥
अस्तु कलशया ॥ श्रीवर्द्धयुधुनीक ध्वजवलक संचामलं मङ्गशर्क ॥ अहम
मदं नं नविससी उरया दाहिना चर्क सख ॥ ७ ॥ ॐ नमो वक्र ॥ ॐ उर्द्धवक्र
धुनिजयवनयनं वक्रयागिष्वरूपं देवानी वृष्टुं सनसिजनयनं नाज
हंसासनं ॥ चयादूनामवर्द्धु उजधनचक्रं चाक्रमालाजयं ॥ सस्य नय
दं र्वं तं दिजकुलसकला चिंतय हं दिजन्तु ॥ ८ ॥ सर्वलोदवत्याः वक्रादि
मूर्त्तयो नमानमः ॥ अर्गं धादि ॥ ९ ॥ धयालिता अस्तिनवाय ॥ निष्ठाव

वायुवे २ ॥ सूं: कूवेनाय २ ॥ दूं: वूं: वानाय २ ॥ जूं: जूधाय २ ॥ उूं: कूं: वूं
 उद्धाय २ ॥ जूं: जूदियाय २ ॥ सूं: सामाय २ ॥ वूं: वूधाय २ ॥ वूं: वृहस्य
 तय २ ॥ हूं: हुकाय २ ॥ गूं: गानिष्वनाय २ ॥ नां: नादवे २ ॥ कूं: कतवे २
 ॥ ददयादिषु उद्धनयूजा ॥ आवादनस्त्रायन, चन्द्रनाकत, यूष्यनमः ॥
 धूप, दिय, निष्ठमन्, उयदायित ॥ जाय ॥ स्नात ॥ शीतवला, निर्वं नि
 वकर्तयादि ॥ जूगंधादि ॥ वृत्तिशीतलयूजा ॥ ॥

पानिस, दयान, वलियात, विरय ॥ विरयात, कर्ममालकाय, वा
 याविधि, निव, गकि, कलस, थंदिन, कूंक्रम, (गन २ स (गन, वलि
 जूधयात, मर्जात (थं यूजा धूनक, वूकानकायक, समचकाय, धून
 कात, मदस ॥ कोमालिगागयाय ॥ सगिकुद्र, यालिस, यूजा धूनक, वि
 सूर्जन, आगियादविरय, जऊमान, द्रसकन, सिधुमूद, कूंक्रम, लडा
 द्राय ॥ कूंक्रम २ उधूत्रिक ॥ ॥ उंनमः नीमकुनवाकन, देन

वलिविय ॥ ॥ ततः च त्रि सा धन विधि, हाथ पूजा ॥ ना हा गि स, च
तन, सा ह्नि क काय ॥ गुय कौल मूर्त्य, ॐ द मा स र्ने न मः ॥ चन्दन, सिं
धून, जल्लाय विनः, पूर्य न मः ॥ जूत गं धा दि ॥ ॥ च त्रि सा धन याय ॥
न्या स, याय ॥ जा कि चूय, मि या च क ॥ त्रं जां जी दू न मः ॥ थ म नु न मि क्का
य क ॥ ग य छि न, सु का विं न ति वा न ज य ॥ २१ ॥ व ति नि, न वा त्सा, ष ठ ऊ
पू जा ॥ आ वा ह ना दि, धन मूडा ॥ जां जी दू न मः ॥ ॐ ति च त्रि सा धन ॥